RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

आकाशवाणी : संगीत के संदर्भ में

डॉ ऋचा

असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत गायन) श्री लाल नाथ हिन्दू कॉलेज, रोहतक – 124001

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
आकाशवाणी, संगीत, इतिहास, जनमानस, विकास

***Corresponding Author**
Email: pannuricha@gmail.com

ABSTRACT

आकाशवाणी पर प्रसारण से पूर्व संगीत का एक विस्तृत दायरा नहीं था। वह या तो रियासतों में बंद था या लोक कला के रुप में पनप रहा था। दोनों ही स्थितियों में इसका दायरा बहुत संकुचित था। अलग–अलग रियासतों में अलग–अलग घरानों के संगीतज्ञों का पोषण होता था तथा लोक संगीत अपने–अपने गांवों, कस्बों आदि के सीमित दायरे में रहता था। आकाशवाणी की भारतीय मंच पर पुराने दिग्गजों तथा होनहार युवा कलाकारों के लिए अवसर दाता के रुप में प्रस्तुति हुई। इससे संगीतज्ञ अपनी कला में अधिक निखार ला सके और अधिकाधिक लोगों के खाली समय में मनोरंजन के लिए उनके घरों में संगीत पहुंचाने में सफल हुए। इस नव प्राप्त संरक्षण से कलाकारों को आज़ादी एवं राहत की एक नई साँस मिली। भारत में समूल्य आयोजनों की अनुपस्थिति ने भी संरक्षक के रुप में आकाशवाणी की महत्ता को बढ़ावा दिया।

यह सत्य है, कि मद्रास तथा कुछ अन्य नगरों में सशुल्क समायोजन किए जाते थे, पर शेष भारत में ऐसा नहीं था। संगीत और संगीतज्ञों को देश के कोने–कोने तक पहुंचाने में आकाशवाणी ने एक सशक्त माध्यम की भूमिका निभाई। लोगों के अकेलेपन को कम करने के लिए संगीत के प्रसारण ने मनोरंजन के एकमात्र प्रमुख स्त्रोत का काम किया। आज आकाशवाणी एक तरह से विशालतम संगीत भवन है। भारत में सबसे बड़ा सांगीतिक मंच और व्याख्यान मंदिर है। लाखों घरो में सुबह से रात तक लगातार मनोरंजन के रुप में विभिन्न संगीतमय आवाज़ें सुनी जा सकती हैं। आकाशवाणी द्वारा शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोकसंगीत भक्ति संगीत, वादय संगीत के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। आकाशवाणी द्वारा संगीत प्रतियोगिताओं व संगीत सम्मेलनों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है। विभिन्न केन्द्रों पर संगीत सभाएं भी आयोजित की जाती हैं। संगीत की सभी विद्याओं को आकाशवाणी ने एक अलग पहचान दी है।

दुनिया में प्रसारण का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, अपितु 20वीं शताब्दी की ही देन है। विज्ञान ने किसी भी क्षेत्र में शायद ही इतने कम समय में इतनी प्रगति की हो, जितनी प्रसारण के क्षेत्र में की है। रेडियों का अविष्कार तो 20वीं शताब्दी में हुआ, परंतु वास्तव में रेडियों के उद्भव एवं विकास की कहानी सन् 1815 ई॰ से शुरू होती है। इटली के एक इंजीनियर 'गुगलेमो मार्कोनी' ने रेडियो टेलीग्राफी की सहायता से पहले संदेश को प्रसारित करने का परीक्षण किया था।[1] सन् 1890 में मार्कोनी ने हवा में चलने वाली ऐसी तरगों का अवष्किार किया, जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश ले जा सके। इस तकनीक को ''वायरलेस' का नाम दिया गया। इसका प्रयोग पानी के जहाजों व नौकाओं में संदेश भेजने में होने लगा।[2] सन् 1897 में इटली वैज्ञानिक में 'वायरलेस टेलीग्राफ एंड सिग्नल कम्पनी लिमिटेड' की स्थापना की। यह रेडियों यंत्रों को बनाने वाली पहली व्यावसायिक कंपनी थी। बाद में इस कंपनी का नाम बदल कर 'मार्कोनीज़ वायरलेस टेलीग्राफ कंपनी लिमिटेड' रख दिया गया। मार्कोनी ने इस दिशा में लगातार प्रयासरत रहते हुए सन् 1901 में लंबी दूरी तक संदेश भेजने का एक प्रयोग किया। इस प्रकार मार्कोनी ने रेडियो के उद्भव और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

आकाशवाणी नामकरण के प्रारम्भिक समय पर यदि दृष्टिपात करें, तो ज्ञात होता है, कि सन् 1935 ई॰ में तत्कालीन देशी रियासत मैसूर द्वारा संचालित एक रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई, जिसे मैसूर सरकार ने 'आकाशवाणी' की संज्ञा दी। 8 जून 1936 को अंग्रेजी सरकार ने आकाशवाणी का अंग्रेजी नामकरण 'आल इंडिया रेडियो' के रुप में किया। 15 अगस्त 1947 को जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उसके कुछ समय बाद देशी रियासतों के रेडियो स्टेशन 'ऑल इंडिया रेडियो' में सम्मिलित कर लिए गए। वर्तमान समय में रेडियो अंग्रेजी में 'ऑल इंडिया रेडियो' व भारतीय भाषा में आकाशवाणी के नाम से जाना जाता है। सन् 1926 ई॰ में बम्बई, कलकत्ता, तथा मद्रास में कुछ व्यक्तिगत रेडियो क्लबों द्वारा सरकार के एक लाइसेंस के आधार पर प्रसारण सेवा आरम्भ की गई। सन् 1930 ई॰ में भारत सरकार ने प्रसारण सेवा का प्रबंधन अपने अधिकार में ले लिया। सरकार ने सन् 1930 ई॰ में 'India broadcasting company" के नाम से एक नया उपक्रम शुरु किया। इसके अधीन बम्बई व कलकत्ता के केन्द्र कार्य करने लगे। कुछ समय बाद इस उपक्रम का नाम 'इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग सर्विस' रखा गया।[3] इस प्रकार यह सेवा आगे विकसित होती चली गई और सन् 1936 में अंग्रेजी सरकार ने इस का नाम 'All India

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Radio" के रुप में किया। तीन वर्ष के भीतर ही सन् 1939 के लगभग दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, पेशावर, लाहौर, ढाका और त्रिचनापल्ली में 9 केन्द्र स्थापित हो चुके थे।[4] इस प्रकार स्वतन्त्रता के समय नौ प्रसारण केन्द्र भारत में थे, जिनमें स्वतंत्रता के पश्चात् लाहौर, पेशावर और ढाका स्टेशन पाकिस्तान में चल गए और भारत में केवल 6 केन्द्र ही रह गए।[5]

योजनाबद्ध विकास :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत सुगठित शासन मिलने पर समस्त क्षेत्रों में सुनिश्चित योजनाएं तैयार होने लगीं तथा रेडियो का विधिवत विस्तार प्रथम पंचवर्षीय योजना से प्रारम्भ हुआ। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत वर्ष 1951–56 तक कुल 25 केन्द्र स्थापित हो चुके थे। सन् 1952 में तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री केसकर द्वारा शास्त्रीय संगीत के अधिक प्रसारण सम्बन्धी कदम उठाए गए। इस वर्ष सर्वप्रथम संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रसारित हुआ। सन् 1952 में ही बम्बई केन्द्र पर प्रथम आकाशवाणी संगीत एकांश व आकाशवाणी वाद्यवृन्द की स्थापना हुई। सन् 1954 में रेडियो संगीत सम्मेलन का श्री गणेश हुआ।[6]

दूसरी पंचवर्षीय योजना में संगीत के कार्यक्रमों की दृष्टि से सन् 1956 ई॰ में ओपेरा का अखिल भारतीय कार्यक्रम व सन् 1957 में प्रथम सुगम संगीत समारोह उल्लेखनीय हैं। इसी वर्ष मनोरंजन एवं फिल्म संगीत के प्रसारण के लिए 'विविध भारतीय सेवा आरम्भ की गई। इस प्रकार 1961 ई॰ तक स्वर–परीक्षा समितियां, विविध भारतीय सेवा, राष्ट्रीय कार्यक्रम, कार्यक्रम विनियम सेवा, संगीत सम्मेलन, आकाशवाणी वाद्यवृन्द इत्यादि अनेक नए संस्थान प्रसारण के क्षेत्र में उभरने लगे।

चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् 1969 में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दिल्ली केन्द्र पर युववाणी चैनल का उद्घाटन किया। सन् 1970 में हैदराबाद में युववाणी सेवा शुरु की गई। सन् 1973 में 'युववाणी' शीर्षक से युववाणी सेवा सभी केन्द्रों से प्रारम्भ की गई।[7] इसी वर्ष लोकसंगीत को अखिल भारतीय कार्यक्रम में प्रसारित करने का क्रम आरम्भ किया गया तथा इसका नाम 'प्रादेशिक अखिल भारतीय कार्यक्रम' रखा गया।[8] विभिन्न केन्द्रों पर संगीत सभाओं के रुप में वार्षिक रेडियो संगीत सम्मेलन किया जाने लगा। इसी के साथ पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत सन् 1974 में आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार शुरू किए गए। आगे चलकर सन् 1977 में प्रथम एफ. एम. ट्रांसमीटर की स्थापना मद्रास में की गई। एक निश्चित लाइसेंस फीस पर बहुत से एफ.एम. केन्द्र निजी कम्पनियों को उपलब्ध कराए गए। इससे जहाँ रेडियो की विश्वसनीयता का आभास मिलता है, वहीं दूसरी ओर राजस्व अर्जित करने में सफलता प्राप्त होती है।

आकाशवाणी के सांगीतिक कार्यक्रम :–

आकाशवाणी द्वारा संगीत के प्रसारित अनेक कार्यक्रमों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट कार्यक्रम रहा है – 'शास्त्रीय संगीत का राष्ट्रीय कार्यक्रम'। इसके प्रसारण की शुरूआत 20 जुलाई 1952 को आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से हुई। इस कार्यक्रम में प्रथम प्रस्तुति के रूप में पं. रवि शंकर का सितार वादन प्रसारित किया गया। इनके अतिरिक्त पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. नारायण राव व्यास, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, उस्ताद अमीर खां, पं. भीमसेन जोशी, पं. कुमार गंधर्व, उस्ताद अली अकबर खां आदि सभी प्रमुख कलाकारों के कार्यक्रम इसके अन्तर्गत प्रसारित हुए हैं। इसमें देश के उच्चकोटि के संगीतकारों के अतिरिक्त उभरते हुए कलाकारों की रिकार्डिंग प्रसारित की जाती है। समय–समय पर योग्य व गुणीजनों को आमंत्रित कर शास्त्रीय संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण नियमिति रूप से किया जाता है।

2. संगीत सभा : आकाशवाणी द्वारा संगीत सभाओं के आयोजन का कार्य विशेष प्रंशसनीय है। प्रातःकालीन संगीत सभा के माध्यम से प्रातः कालीन रागों को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया जाता है। इसी प्रकार रात्रिकालीन संगीत सभा आयोजित की जाती है। संगीत के युवा कलाकारों के लिए विशेष संगीत सभा का प्रसारण किया जाता है। देश के विभिन्न भागों में प्रतिष्ठित कलाकारों की जयंतियों के अवसर पर अनेक शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियों का आयोजन किया जाता है। आकाशवाणी द्वारा संगीत समारोहों व सम्मेलनों की रिकार्डिंग की जाती है और समय–समय इन्हें प्रसारित किया जाता है, जो आम जन के मनोरंजन व संगीत जिज्ञासुओं की सक्रिय रूचि व मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होते हैं।

3. राष्ट्रीय वाद्यवृन्द : आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा वाद्यवृन्द को विकसित करने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। आकाशवाणी वाद्यवृन्द की स्थापना सन् 1952 में दिल्ली केन्द्र में की गई, जिसमें 27 वाद्यों का मिश्रण था। पं. रवि शंकर और टी.के जयराम द्वारा वाद्यवृन्द के विकास में गम्भीर प्रयत्न किए गए। आरम्भ में वाद्यवृन्द के अर्न्तगत 28 संगीतज्ञ शामिल थे। पं. रवि शंकर ने आकाशवाणी में लगभग सात वर्षों तक भारतीय वाद्य वृन्द के क्षेत्र में अनेक नवीन प्रयोग किए। 60 से अधिक वादकों के संगठन का कुशल नेतृत्व करते हुए 'आकाशवाणी वाद्यवृन्द' का उत्थान किया तथा अनेक सुन्दर रचनाओं का निर्माण किया। इन रचनाओं में इन्होंने सितार, वीणा, सरोद, सारंगी, जलतरंग, तबला, ढोलक, बांसुरी व अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग किया। वाद्यवृन्द के स्वतंत्र कार्यक्रमों के अतिरिक्त आकाशवाणी के अन्य कार्यक्रमों में भी वाद्यवृन्द का प्रयोग किया जाता है।

4. महाफिल व संगीत पत्रिका : आकाशवाणी द्वारा कलाकारों के साक्षात्कार पर आधारित कार्यक्रम 'महफिल' का प्रसारण किया जाता है। इसमें संगीतकार को आमंत्रित करके उनकी

गायन–वादन शैलियों की चर्चा की जाती है। अतिथि कलाकारों से उनकी सांगीतिक उपलब्धियों, शिक्षा–दीक्षा के बारे में चर्चा करके उनके संगीत के कुछ अंश भी इस कार्यक्रम में प्रसारित किए जाते हैं।

'संगीत पत्रिका' में शास्त्रीय संगीत के विभिन्न विषयों पर वार्तालाप व संगीत के अवरोधक से जुड़ी समस्याओं सम्बन्धी कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। इस कार्यक्रम में संगीत के कलाकार, शिक्षक व आलोचक आदि सामूहिक रूप से विषय के पहलुओं पर वार्तालाप करते हैं तथा अपना–अपना पक्ष रखते हैं। संगीत के विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए यह एक उत्तम कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत संगीत के विभिन्न विषयों जैसे–संगीत–शिक्षण, संगीत लेखन, राग मिश्रण, शास्त्रों की प्रासंगकिता, समय सिद्वान्त इत्यादि पर चर्चा की जाती है।

5. संगीत प्रतियोगिता : शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता आकाशवाणी की विभिन्न गतिविधियों में विशेष महत्व रखती है। इस प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता हे। इन प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत शास्त्रीय, उप–शास्त्रीय, तथा सुगम संगीत तीनों विधाओं को सम्मिलित किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को कार्यक्रम प्रसारण के अवसरों के साथ–साथ पुरस्कार भी दिए जाते हैं। युवा प्रतिभाओं को प्रसारण की सुविधा प्रदान करने वाला कार्यक्रम 'युवावाणी' कहलाता है। युवा कलाकार विभिन्न केन्द्रों से संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इन कार्यक्रमों से उन्हें प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता भी प्राप्त होती हैं। युवा संसार, युवावाणी आदि कार्यक्रम युवाओं से ही सम्बन्धित होते हैं, जिसमें प्रसारण अवसर के साथ–साथ पारिश्रमिक भी दिया जाता है।[9]

सुगम संगीत व लोक संगीत कार्यक्रम :

सुगम संगीत का कार्यक्रम भी आकाशवाणी द्वारा नियमित रूप से प्रसारित किया जाता है। सुगम संगीत के अन्तर्गत गीत, गजल, भजन व कव्वाली आदि को रखा जाता है।

The AIR Station of Calcultta had suggested to prepare song sung by first class artist and to on playing the song once everyday for a hole week, this will give a full album of 52 songs every year. Many other stations like madras and tircuhy had created a new type of music, which is related to our tradition. आकाशवाणी द्वारा सुबह–शाम भजनों का प्रसारण किया जाता है। देश के बड़े–बड़े भजन गायकों को आमंत्रित किया जाता है। इसी प्रकार गज़लों के कार्यक्रमों के अन्तर्गत बड़े से बड़े कलाकार अपनी प्रस्तुति देते हैं। इसके अतिरिक्त कव्वाली और सुफियाना संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण भी आकाशवाणी द्वारा नियमित रूप से होता रहता है।

लोक संगीत के संरक्षण में भी आकाशवाणी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आकाशवाणी का प्रत्येक केन्द्र अपने क्षेत्र के लोक संगीत के कलाकारों को नियमित रूप से आमंत्रित करता रहता है तथा कार्यक्रम की रिकार्डिंग भी नियमित रूप से की जाती है। इससे स्थानीय कलाकारों को भी प्रोत्साहन व आर्थिक संरक्षण मिलता रहता है। इस प्रकार लोक संगीत अपनी विशेषताओं के कारण समाज के हर वर्ग में पंसद किया जाता है। वाद्य संगीत के कार्यक्रम भी समय–समय पर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किए जाते है। निःसन्देह ही रेडियो पर कार्यक्रमों के प्रसारण का एक बहुत बड़ा रूप संगीत पर आधारित है। परन्तु जिस भाग में मूलतः संगीत के कार्यक्रमों का प्रसारण नहीं होता, उनमें भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संगीत निहीत रहता है। संगीत के अभाव में रेडियो के कार्यक्रमों के प्रसारण क्रम के माध्यम से खाली स्थान को भरा जा सकता है। संगीत पर आधारित कार्यक्रमों के अलावा अन्य कार्यक्रमों अथवा स्थान पर संगीत की भूमिका अहम है। प्रातः या सांय के समाचारों की शुरूआत एक विशिष्ट सांगीतिक ध्वनि से होती है। समाचारों के प्रस्तुतीकरण में एक विशिष्ट लय का प्रयोग किया जाता है और यह लय कहीं न कहीं समाचार के प्रारम्भ में बजने वाली सांगीतिक धुन के ऊपर आधारित होती है। जिस लय अथवा गति में समाचार वाचक समाचार पढ़ना शुरू करता है, अन्त तक उसी लय व गति का निर्वाह करता है। पृष्ठ भूमि संगीत (Background Music) का प्रयोग हम प्रत्यक्ष रूप से न करके अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए करते हैं। पृष्ठभूमि संगीत का प्रयोग आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा और नाटक आदि में किया जाता है। पृष्ठभूमि संगीत के अभाव में विशेष कार्यक्रमों में विशिष्ट भाव को उत्पन्न करना नामुमकिन सा प्रतीत होता है। रेडियो पर जितने भी नाटक और कहानियों का प्रसारण होता है, उन सब में पृष्ठ भूमि संगीत अवश्य होता है। रेडियो स्टेशन के प्रसारणों के प्रारम्भ व समापन पर किसी विशिष्ट कार्यक्रम की पहचान के लिए संकेत धुनों का प्रयोग किया जाता है। सप्ताह के प्रत्येक दिन रेडियों के कार्यक्रम की शुरूआत संकेत धुन से होती है। किसी कार्यक्रम के प्रारम्भ में बजाया जाने वाला संगीत, जो कार्यक्रम की पहचान के रूप में भी कार्य करता है, उसको संकेत धुन कहते हैं। किसी कार्यक्रम के विषय परिवर्तन के समय जो आर्कषक सी धुन सुनाई देती है, यह शीर्षक धुन के रूप में जानी जाती है। जहाँ ये संगीत कार्यक्रम की पहचान के रूप में कार्य करता है, वहीं दूसरी ओर कार्यक्रम को भावात्मक दृष्टि से भी श्रोताओं को जोड़े रखता है। जब किसी कार्यक्रम के किसी विशिष्ट भाव अथवा विषय को संगीत के माध्यम से उभारने की कोशिश की जाती है, इस प्रकार के संगीत को विषयगत संगीत के नाम से जाना जाता है। किसी कार्यक्रम के वातावरण को तैयार करने के लिए इसी प्रकार के संगीत का प्रयोग किया जाता है जैसे–शहनाई

का बजाना किसी खुशी के विषय का आभास करता है और वहीं दूसरी और सारंगी जैसे वाद्य पर बजाई गई कोई उदास धुन दुख और विषाद का आभास कराती है। इसके अतिरिक्त अन्य विपरीत परिस्थितियों में भी संगीत का प्रयोग करके उनको अनुकूल बनाया जा सकता है। संगीत आकाशवाणी के कार्यक्रमों को एक व्यवस्था एवं सौंदर्य प्रदान करने में अहम भूमिका अदा करता है।

शिक्षित एवं प्रतिष्ठित घरों के बहुत से कलाकार, रेडियो कलाकार के रूप में अपना नाम दर्ज करते हैं। अब संगीत का क्षेत्र व्यापक हो गया है। संगीतकार अवधि के अनुशासन में कार्य करने के अभ्यस्त हो गए हैं। अब श्रोता अतीत और वर्तमान के संगीतज्ञों को आसानी से सुन सकते हैं। आकाशवाणी संगीत के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ है। उच्च कोटी के संगीतज्ञ भी रेडियो की उपयोगिता स्वीकार कर चुके हैं। शास्त्रीय संगीत को जन सुलभ व लोकप्रिय बनाने में जो महत्वपूर्ण भूमिका आकाशवाणी निभा रही है, उसे भूलाया नहीं जा सकता। रेडियो के अविष्कार ने समाज के प्रत्येक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। संगीत शिक्षण के लिए तो यह अत्यन्त उपयोगी उपकरण है। वास्तव में संगीत–श्रवण से ही व्यक्ति सुख प्राप्त करता है। भारत में प्रसारण सुविधाओं के विकास ने ग्रामीण क्षेत्रों में संगीत प्रसारण सुलभ करके एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ये वो माध्यम हैं, जो वहाँ भी पहुँच सकते हैं, जहाँ सड़के नहीं पहुँच सकती। आकाशवाणी के समस्त कार्यक्रम से 40 प्रतिशत कार्यक्रम संगीत को ही समर्पित है। भारतीय संगीत का प्रसारण तो विश्व के अन्य असंख्य देशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। हमारे असंख्य महान संगीतज्ञ विदेशों में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और इसी श्रृंखला में अनेक विदेशी शिष्य भी उन कलाकारों के साथ जुड़ गए हैं। आकाशवाणी ने न केवल भारतीय कलाकारों व युवा कलाकारों को एक मंच प्रदान किया है, अपितु हमारे शास्त्रों में वर्णित परम्पराओं में बिना हस्तक्षेप किए, कुछ निश्चित मानदण्डों का नव निर्माण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह निश्चित है, कि आकाशवाणी के बिना अपने इस परम्परागत कला रूप के प्रति जनता में इतनी व्यापकता पैदा करना सर्वथा असम्भव था।

आकाशवाणी द्वारा संचालित प्रसिद्ध गायक और वादकों के गायन तथा वादन को सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी आकाशवाणी करती है। आकाशवाणी के योगदान को केवल प्रचार–प्रसार दृष्टि से ही पूर्ण नहीं मान लिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त भी संगीत के स्तर, विकास एवं वृद्धि तथा पुनरुत्थान की दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है। आकाशवाणी संपूर्ण जनसंख्या में अधिसंख्यक लोगों के सतत् संपर्क में रहता है। कभी घर में, कार में, दफतर में, समुद्र के किनारे और कभी सड़क पर। प्रसारण भी मुद्रण की ही भाँति सर्वव्यापक है। यही नहीं, कुछ लोगों के लिए तो और भी दूर तक सूचना प्राप्त करने का यह सरल, सुगम एवं साथ रहने वाला माध्यम है, क्योंकि जहाँ समाचार पत्र नहीं पहुँच पाते, वहाँ भी यह उपलब्ध हो जाता है। इसलिए आकाशवाणी का संगीत के साथ एक सतत् रिश्ता है।

संदर्भ – ग्रंथसूचि

1. अशोक कुमार यमन, रेडियो और संगीत, पृ. 33
2. रूपचंद गौतम, संचार से जनसंचार, पृ. 137
3. हरिमोहन, रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, पृ. 71–72
4. संगीत (पत्रिका) Aug, 1987 पृ. 46
5. राधिका शर्मा, भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, पृ. 247
6. शुचिस्मिता, आकाशवाणी एवं हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, पृ. 49
7. वही, पृ. 52
8. राम बिहारी विश्वकर्मा, आकाशवाणी, पृ. 18
9. राधिका शर्मा, भारतीय संगीत को संस्थानों और मीडिया का योगदान, पृ. 265

RRIJM 2015, All Rights Reserved